ISSN 2348-3857

भारतीय परम्परा में अहिंसा : ऐतिहासिक पक्ष

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

डॉ. मुकेश कुमार वर्मा

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

डॉ. रुपचद बैरवा

व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बडियाल कलां, बाँदीकुई, दौसा (राजस्थान)

शोध सारांश

अहिंसा का भारतीय दर्शन और धर्मों में विशिष्ट स्थान रहा है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्तमान वैश्वीकरण के इस दौर में एक और मानव ने जहाँ भौतिक प्रगति प्राप्त की है, वहीं दूसरी और मानव ने स्वार्थ, लोभ, हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर आपसी कलह, अतिक्रमण आदि का भी विनाशकारी मार्ग अपनाया है। अत: आज संसार का प्रत्येक भाग हिंसा की पीडा से त्रस्त है। दुनिया आज जिन समस्याओं का सामना कर रही है उसकी जड़ में अहिंसक मूल्यों से दूर चला जाना है। अत: जिन परिस्थितियों में आज विश्व है, उन परिस्थितियों में विश्व को यह समझ जगाने की जरूरत है कि हिंसा से कभी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता बल्कि यह लक्ष्य अहिंसात्मक तरीके से हासिल करना होगा। नि:सन्देह वर्तमान समस्याओं का एकमात्र हल यही है कि संघर्षों का समाधान करने के लिए अहिंसात्मक तरीके अपनाए जायें। ये अहिंसा भारतीय परम्परा में अत्यन्त प्राचीन अवधारणा रही है। विभिन्न भारतीय धर्मग्रन्थों में अहिंसा को एक अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया है।

संकेताक्षर : *व्यवहारिक अहिंसा, जीवन दर्शन, विश्वशान्ति*

विश्व सभ्यता के इतिहास को हिंसा और अहिंसा के संघर्ष की कहानी कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि आज संसार का प्रत्येक भाग हिंसा की पीडा से त्रस्त है। प्रत्येक दिन मीडिया में हिंसक घटनाओं की खबरें आती हैं और कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ के समाचार पत्रों में मृत्यु, हिंसा और मानव हत्याओं की हिंसक समाचार न हो।

वर्तमान इक्कीसवीं शताब्दी में कोई संदेह नहीं कि इस समय भौतिक प्रगति ऊँचे और उन्नत स्तर पर पहुँच चुकी है। वैश्वीकरण के इस दौर में एक और मानव ने समृद्धि प्राप्त की है, वहीं दूसरी और उसने स्वार्थ, लोभ, हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर आपसी कलह, अतिक्रमण आदि का भी अकल्याणकारी और विनाशकारी मार्ग अपनाया है। अत: आज संसार में चारों तरफ कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं जैसे हिंसा, धार्मिक उन्माद और साम्प्रदायिक दंगो, नस्लीय टकराव, कट्टरपंथी और जातीय जनसंहार, सांस्कृतिक फासीवाद, हिंदुत्व आंतकवाद और ऐसी ही अन्य गंभीर समस्याओं का बोलबाला है। आज भौगोलिक दृष्टि से दूरी कम हुई है लेकिन व्यक्ति से व्यक्ति के बीच अन्तर बढ गया है। सहयोग का स्थान प्रतिस्पर्धा एवं उपभोक्तावाद ने ले लिया है। वर्तमान समय में विश्व के सभी देशों के बीच परमाणु शक्ति बनने की होड लगी हुई है। आतंकवाद चारों और फैला हुआ है। कई देशों में गृह युद्धों की भयावह स्थिति बनी हुई है। ये प्रत्येक विध्वंसक कार्य हमारी मूल प्रवत्ति के विरूद्ध हैं। दुनिया आज जिन समस्याओं का सामना कर रही है, उसकी जड़ में अहिंसक मूल्यों से दूर चला जाना है।

अत: जिस वातावरण एवं जिन परिस्थितियों में आज विश्व है, जो घटनाएँ हमारे सामने घटित हो रही हैं उन परिस्थितियों में विश्व को यह समझ जगाने की जरूरत है कि हिंसा से कभी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। यह लक्ष्य सिर्फ तकनीकी शक्तियों के उपयोग से हासिल नहीं किया जा सकता बल्कि अहिंसात्मक तरीके से हासिल करना होगा। नि:सन्देह वर्तमान समस्याओं का एकमात्र हल यही है कि संघर्षों का समाधान करने के लिए अहिंसात्मक तरीके अपनाए जायें।

अहिंसा भारतीय परम्परा का अहम् हिस्सा रही है। प्रकृति की सर्वोत्तम उपज मानव को सर्वोत्तम बनाने और उसे अपने अनुकूल सभ्यता और संस्कृति की रचना में लम्बी काल यात्रा को पूर्ण

करना है। उसने इस लम्बी यात्रा को अपने अनुकूल बनाने वाले वातावरण को निर्मित करने के लिए अनेक तरीकों का सहारा लिया है। इन तरीकों को आज के संदर्भ में हिंसक और अहिंसक में वर्गीकृत करते हैं। किन्तु मानव का प्रारम्भिक अस्तित्व कहीं न कहीं हिंसा पर ही आधारित था और कुछ सीमा तक आज भी हिंसा मानव के हित साधन का एक बडा स्रोत है किन्तु इसका दूसरा पक्ष भी रहा है जिसे मानव के हृदय में दयालुता के गुण तथा हिंसा से छुटकारा पाने की चाहत में खोज सकते हैं जिसे अहिंसा के नाम से जाना जाता है। भारतीय परम्परा में प्राचीनकाल से लेकर गांधी के समय तक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक साध्यों को प्राप्त करने के लिए अहिंसा का तकनीक के रूप में अपना अलग महत्व रहा है। अहिंसा को व्यवहारिक रूप में परिणीत करने का कार्य राष्ट्रपिता गांधी ने किया जिसके उनको अपेक्षित परिणाम भी मिले। जबकि भारतीय परम्परा में अहिंसा का महत्व वैदिककाल से ही रहा है परन्तु अब अहिंसा धीरे-धीरे दर्शनशास्त्र की विषयवस्तु बनती जा रही है। अब मानव जाति के सामने एक ही विकल्प शेष रह गया है कि वह शांति स्थापना हेतु अहिंसा का यथार्थ के आधार पर विश्लेषण करे तथा उसको समाज विज्ञान के क्षेत्र में लाते हुए समाज एवं राज्य की दृष्टि से मूल्यांकित किया जाये।

अहिंसा : ऐतिहासिक पक्ष

अहिंसा शब्द एक अत्यन्त प्राचीन शब्द हैं जो परम्परा का हिस्सा तो सदियों से रहा है किन्तु इतिहास लेखन की दृष्टि से अहिंसा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'छन्दोग्योपनिषद्' में किया गया है।[1] इसमें कहा गया है यज्ञ, हवन आदि में भी अहिंसा को महत्त्व दिया जाना चाहिए। ''पद्म-पुराण में विष्णु भगवान को खुश करने के लिए आठ पुष्पों का वर्णन है जिसमें अहिंसा को प्रथम पुष्प कहा गया हैं।''

महाभारत का 'अनुशासन पर्व' भी अहिंसा का ही पर्व है इसमें अहिंसा को परम धर्म, परम तप, परम सत्य, परम संयम, परम यश, परम मित्र, परम सुख कहा गया है और सब धर्मों की उत्पत्ति अहिंसा से ही मानी गयी है। ''मनुस्मृति में भी अहिंसा की प्रशस्ति में लिखा गया है जो मनुष्य होकर भी अहिंसक अर्थात् निरपराधी प्राणियों को अपने सुख के लिए दु:ख देता है उनकी हिंसा करता है वह न तो इस जन्म में सुखी रहता है और न ही मरने के बाद स्वर्ग में सुख ही प्राप्त कर सकता है।

''जैन वाङ्मय में अहिंसा को परमब्रह्म कहा गया है।''[2]

''अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमम्।''

इसलिए प्राण घात को ब्रह्म घात की संज्ञा दी गई है। गुलाब चन्द जैन कहते हैं कि अहिंसा जैनागम का प्राण है।[3] भारतीय आध्यात्मिक परम्परा का अवलोकन करे तो अहिंसा सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है इसके महत्त्व को भारतीय साहित्यकार और राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर उद्घाटित करते हैं कि वेदों में निश्चल भोगवाद की प्रवृत्ति अवश्य है किन्तु वेद केवल हिंसा ही नहीं सिखाता। भारत में अहिंसा की परम्परा प्राग्वैदिक की है। इसके साथ ही वेदों में यज्ञ के निमित्त पशुबलि को ब्राह्मणों द्वारा समर्थन के बाद भी कुछ लोग इसे निकालना चाहते हैं।[4] इन्होंने कहा है कि ''जैन तीर्थंकरों और बुद्धदेव का जन्म भी नहीं होता अगर भारतीय परम्परा से हिंसा अनुपस्थित होती।''[5]

वास्तव में ब्राह्मण ग्रन्थों में केवल ''सर्व भेद सर्व इन्यात सर्व मेव यज्ञ'' में सब कुछ मारा जा सकता ही नहीं है ''मा इश्यात सर्व पूतानी'' किसी जीव को मत मारो का आदेश भी है। ''दिनकर ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में अहिंसा की जो व्याख्या की है उसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि हिंसा परम वैदिक यज्ञ और बुद्धदेव की अहिंसा के बीच भगवान कृष्ण की अहिंसा, कड़ी का काम करती है। इसमें श्री कृष्ण यज्ञ का आमूल विरोध ही नहीं कर यज्ञ के अर्थ में आमूल परिवर्तन कर देते हैं। वे कहते हैं कि उत्तम यज्ञ वह है जिसमें किसी भी जीव की हत्या नहीं होती।''[6] हिन्दू धर्म शास्त्र के अलावा अन्य धर्मों में भी अहिंसा एक प्रमुख धरोहर रही है। इस्लाम इन्सान को बराबरी और भाईचारा सिखाता है। इन्सान चाहे राजा हो या गुलाम। ''काका कालेलकर नवी शाहब भी नवाज अदा करने के आदेश का जिक्र करते हैं जिसमें प्रहार सहकर रणक्षेत्र में भी समय पर नवाज अदा करना कर्त्तव्य कहा गया है।''[7] इस्लाम परायण खलीफाओं, औलियों में भी किसी न किसी रूप में अहिंसा रूपी नदी की धारा अखण्ड रूप से प्रवाहित हुई है। नागौरी लिखते हैं कि कुरान में खुदा परस्त ही का खमीर टीका रहता है इन्होंने औदार्य मूर्ति चौथें उस्मान का उदाहरण दिया है जिन्होंने अपने घर घुस आये बागियों से घिर जीने पर भी अपनी गोद में कुरान शरीफ लेकर समआते-समआते अपना शीश उतरवा दिया।''[8] कुरान जहां अहिंसावादी दर्शन से भरा पड़ा है वहीं ईसायत और बाइबिल में भी अहिंसावादी दर्शन पर्याप्त मात्रा में मिलता है।[9] ''ईसामसीह ने कहा है कि अपने दुश्मन से भी प्यार करो।'' ''पर्वत प्रवचन में कहा गया है कि तुम अपने अपराधियों को उदारतापूर्वक क्षमा करो क्योंकि तभी तुम उस प्रभु की क्षमा के अधिकारी बन सकोगे। इस प्रकार ईसाइ धर्म कृतघ्न के प्रति करुणा प्रदर्शित करना सिखलाता हैं।''[10] ''बाइबिल में सात विभिन्न रीतियों से सच्ची शांति को दिखाया गया है यथा मसीद की शांति, महान शांति, पूरी शांति, पूर्ण शांति, नदी की नाई शांति, परमेश्वर की शांति, अन्त न होने वाली शांति।''[11]

भारतीय धर्मों जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म की प्राचीन पवित्र पुस्तक गीता में भी अहिंसा के असीम स्रोतों के दर्शन होते हैं। ''आर्यावर्त के महामानव भगवान महावीर ने अहिंसा की परिभाषा इस प्रकार दी है- प्राणी मात्र के प्रति संयम रखना ही अहिंसा है। इसी प्रकार अहिंसा की ओर भी व्यापक परिभाषा व्यक्त करते समय कहा गया है कि मन, वचन और काया इनमें से किसी एक द्वारा भी किसी प्रकार के जीवों कि हिंसा न हो। ऐसा व्यवहार करना ही संयमी जीवन है ऐसे जीवन का निरंतर धारण ही अहिंसा है।'' गौतम बुद्ध ने अहिंसा की परिभाषा देते हुए कहा है कि त्रय या स्थावर जीवों को न मारे, न मरावे, न मारने वालों का अनुमोदन करें। ''गीता में श्री कृष्ण की वाणी इस प्रकार प्रभावित हुई है- ज्ञानी पुरुष ईश्वर को सर्वत्र समान रूप से व्याप्त देखकर हिंसा की प्रवृत्ति नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि हिंसा करना खुद अपनी ही घात करने के बराबर है और इस प्रकार स्रदय में शुद्ध और पूर्ण रूप से विकसित होने पर वह उत्तम गति को प्राप्त करता है। पतंजलि योग के भाष्यकार ने बताया कि सर्वप्रकार के सर्वकाल में सर्वप्राणियों के साथ अभिद्रोह न करना अहिंसा है।''[12]

विभिन्न पाश्चात्य विद्धानों जिन्होंने गाँधी को तथा उनके विचारों को प्रभावित किया, उनकी रचनाओं एवं विचारों में अहिंसात्मक तत्व व अहिंसा का प्रबल समर्थक पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। ''टॉलस्टाय कहा करते थे कि घृणा करनी हो तो पाप से की जाय, न की पाप करने वालों से।'' इसके अतिरिक्त टॉलस्टाय की रचनाओं में सर्वत्र उन्हें बुराई और पाप को निशाना बनाये हुए पाया जा सकता है। टॉलस्टाय की रचना ब्रेड लेबर में अनेक अहिंसात्मक तत्त्व दृष्टान्तों के रूप में विद्यमान हैं। इसी तरह डेविड थ्योरों अमरीकी दार्शनिक के विचारों में जो कि ''सिविल डिसओबिडिएंस'' में व्यक्त किये गये हैं अहिंसा के पूरक विचारों के दर्शन होते हैं। इनका मानना है कि प्रत्येक उस आदेश का विरोध किया जाना चाहिए जो कि असत्य एवं अन्याय पर आधारित हो। अत: गांधी ने अहिंसा के सिद्धान्तों को न केवल अपने पारिवारिक सूत्रों (माता, पिता, पत्नी), राजा हरिश्चन्द्र, भक्त प्रहलाद जैसे प्रभावी नाटकों, जैन, बौद्ध तथा वैष्णव धर्मों, रामायण तथा महाभारत जैसे धर्म ग्रन्थों टॉलस्टॉय के लेखों तथा बाईबिल के 'सरमन ऑन द माउण्ट' (पर्वत प्रवचन) से ग्रहण किया बल्कि अपने 55 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में गांधी ने हिंसा के अवसर टालने तथा अहिंसा के प्रयोग के अवसर खोजने का निरन्तर प्रयत्न करते रहे।

गाँधी ने अहिंसा को व उसके विचारों को अपने हाथों में लेकर एक नवीन आकार व व्यवहारिकता प्रदान कर दी। अहिंसा का प्रयोग उन्होंने सत्य व सत्याग्रह जैसी अन्य अवधारणाओं के साथ संयुक्त कर इसे एक जीवन दर्शन का समूह प्रदान कर दिया। गाँधी का अहिंसा के संबंध में विचार नित नई उपलब्धियों के साथ प्रस्तुत होता गया। यही कारण है कि गांधी के विचार में नये आयाम जुड़ गये। इनके अनुसार अहिंसा अब मात्र भावात्मक या व्यक्तिगत परिष्करण का साधन नहीं रह गया। जैसा कि गांधी भी कहते हैं कि अहिंसा धर्म केवल ऋषियों और संतों के लिए ही नहीं है। अहिंसा हमारी मानव जाति का कानून है।[13]

गांधी अहिंसा का विशाल अर्थ रखते हैं। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहां हिंसा अनजाने नहीं होती हो लेकिन गांधी जैनियों के सैद्धान्तिक अहिंसा की जगह व्यवहारिक अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में अहिंसा की महत्ता को विभिन्न सिद्धान्तों के रूप में रखते हैं। राजनीति, अर्थनीति, समाज नीति या संस्कृति सभी क्षेत्रों में अहिंसा अपरिहार्य रूप से लागू होती है। इसलिए गांधी राजनीति के आध्यात्मीकरण सम्पत्ति के वितरण के लिए स्वामित्व विसर्जन, सभी जाति व वर्गों को समान प्रतिष्ठा की स्थापना के लिए जो स्वयं में अहिंसा की समाज में स्थापना है उसके लिए भी अहिंसक साधन जैसे सत्याग्रह रचनात्मक कार्यक्रम आचार्यकुल का नवीन विधान देते हैं। साथ ही सांसारिक शांति की स्थापना के लिए शांति सेना की स्थापना का प्रस्ताव रखते हैं। ''मोक्ष की प्राप्ति के लिए ऋषि, मुनि, संत, फकीर आदि ने अहिंसा की साधना की है लेकिन गांधी ने अहिंसा की व्यापक शक्ति को व्यक्तियों की सीमा के बाहर निकालकर सामूहिक रूप से इस पर अमल किया।''[14] उन्होंने कहा कि यदि अहिंसा संगठित नहीं हो सकती तो वह धर्म नहीं है। वह कहते हैं कि यदि अहिंसा व्यक्तिगत गुण है तो मेरे लिए त्याज्य की वस्तु है। मैं तो उनका सेवक हूँ जो चीज करोडों की नहीं हो सकती वह मेरे लिए त्याज्य है। ''गांधी सेवक समाज के मलिकान्दा (बंगाल) सम्मेलन में इन्होंने घोषणा की थी कि सत्य और अहिंसा व्यक्तिगत आधार के नियम नहीं है वे समुदाय, जाति और राष्ट्र की नीति का रूप ले सकते हैं। उनका मानना था कि अहिंसा सब जगहों और समय के लिए उपयुक्त है। इसलिए वे कहते हैं कि ''सत्य और अहिंसा कोई आकाश पुष्प नहीं है वे हमारे प्रत्येक शब्द, व्यापार और कर्म में प्रकट होनी चाहिए।''[15]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि भारतीय परम्परा में अहिंसा अत्यन्त प्राचीन अवधारणा है। विभिन्न धर्मग्रन्थों में अहिंसा को एक अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया है। अहिंसा विश्व शांति की आत्मा है इसलिए अहिंसा का सभी दर्शन और धर्मों में विशिष्ट स्थान रहा है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, मनोज, लोकतन्त्र एवं विश्वशांति, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2005, पृ. 76
2. भट्टाचार्य, प्रभात कुमार, गांधी दर्शन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1972, पृ. 391
3. जैन, गुलाब चन्द, गांधी ज्योति, गांधी विचार विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, वर्ष 4, किरण 3, पृ. 208
4. कुमार, मनोज, पूर्वोक्त, पृ. 77
5. कुमार, मनोज, उपर्युक्त, पृ. 77
6. दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 125
7. काका, कालेलकर, सत्याग्रह विचार और युद्ध नीति, सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी, 1985, पृ. 14
8. नागौरी, इस्लाम भाई, मुस्लिमों का धर्म, सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी, 1971, पृ. 34
9. सिंह, रामजी, गांधी दर्शन मीमांसा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973, पृ. 81
10. गांधी, मो.क., उड़ीसा मेरी नजर में, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 1960, पृ. 58
11. कुमार, हरीश, गांधी : सामाजिक राजनैतिक परिवर्तन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2006, पृ. 45
12. मुनी गणेश, आधुनिक विज्ञान और अहिंसा, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1962, पृ. 142-143
13. यंग इण्डिया, 11.8.20 एवं मो.क., विश्वशांति का अहिंसक मार्ग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1959, पृ. 11
14. हरिजन सेवक, 27-3-37
15. गांधी, मो.क., अहिंसा और सत्य (संपादक श्री सुमन रामनाथ), नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1965, पृ. 181